अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जनवरी-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–नौवां	जनवरी–2025

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग करते हुए बहुत समय हो गया है — 3

07 जनवरी 1990 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी 16 पी.एस. राजस्थान

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

भजन-सिमरन कब करना चाहिए — 27

10 मई 1977 सनबोंटन, अमेरिका

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 274 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

देखी बहुत निराली महिमा सतसंग की

देखी बहुत निराली, महिमा सतसंग की, (2)

1. सतसंग में हैं मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे–धीरे, (2)
जिसने खोज निकाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

2. सतसंग ही सब संकट टारे, डुबते को सतसंग ही तारे, (2)
सदा रहे खुशहाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

3. सतसंग उत्तम तीर्थ भाई, करते हैं जो नेक कमाई, (2)
कर्म हीन रहे खाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

4. सतसंग में सब मिलकर आओ, जीवन अपना सफल बनाओ, (2)
अंत पिटे नहीं ताली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग करते हुए बहुत समय हो गया है

07 जनवरी 1990 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी 16 पी.एस. राजस्थान

सतसंग शुरु करने से पहले मैं आप सबको नए साल की शुभकामनाएं देता हूँ, शुभकामनाएं देते हुए मुझे खुशी हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि आप सबका यह साल खुशियों भरा बीते, आप इस साल ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन कर सकें क्योंकि भजन कर लिया तो सब कुछ हो गया अगर भजन नहीं किया तो कुछ भी नहीं किया।

स्वामी जी महाराज की बानी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे हमेशा ही हमें समझाते रहे हैं कि प्रभु ने हमें इंसानी जामा बहुमूल्य नाम की दात प्राप्त करने के लिए बख्शा है अगर हम इस मौके से फ़ायदा नहीं उठाते तो इस वक्त से वंचित रह जाते हैं। नाम के बिना आत्मा को दोबारा इसी संसार में आकर जन्म लेना पड़ता है। विचार करके देखें! जीव माता के गर्भ में उल्टा लटका होता है, वहाँ किस तरह वक़्त काटता है। वह जगह बहुत ही भयानक होती है, वहाँ यह जीव सांस–सांस के साथ प्रभु को याद करता है। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ।।

वहां भी प्रभु ने हमें अपने सिमरन के जरिए रखा और हमारी रक्षा की। जब हम किसी घर में जन्म लेते हैं तो उस घर में खुशी की लहर दौड़ जाती है, सब हमारे साथ लाड़–प्यार करते हैं एक–दूसरे को बधाइयाँ देते हैं। इस जीव को तरह–तरह के नज़ारे और सामान देखने को मिलते हैं, यह अपने ख्याल को अंदर से हटाकर उन नजारों और सामान में लग जाता है जोकि आखिरी वक़्त इसके साथ नहीं जाएगा। यहाँ का बाजार यहीं छोड़ जाना है, साथ जाने वाली वस्तु 'शब्द–नाम' और प्रभु की भक्ति है।

जिन सन्त–महात्माओं ने मेहनत की उन्होंने हमें समझाया कि एक ऐसी चीज़ हमारे तजुर्बे में आई है जो अनादि काल से सच है। सच बोलना ही सच नहीं, सच परमात्मा हैं जो कभी नहीं बदलते, कभी कम नहीं होते कभी नहीं बढ़ते, उनकी हस्ती सदा ही कायम है। दुनिया का हर सामान, फल, पत्ते, वनस्पति यहाँ तक कि लोहा, सोना हर पदार्थ घटता–बढ़ता है, सब परिवर्तनशील है। जो परमात्मा की भक्ति करते हैं, परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं, वे भी सदा के लिए परमात्मा के साथ मिलाप कर लेते हैं।

कुछ लोगों ने गुरु गोबिंद सिंह जी से ऐसा ही सवाल पूछा क्या दुनिया में कोई ऐसी चीज़ है, जिसका नाम सदा कायम रहे? हम दुनियादार लोग आमतौर पर सोचते हैं कि दुनिया में कोई यादगार बनाएं तो नाम कायम रह जाएगा। गुरु साहब ने उन लोगों से पूछा कि पहले आप बताएं कि आपके ध्यान में ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसे बनाने से नाम रह सकता है? हर एक ने अपना–अपना तजुर्बा बयान करते हुए कहा कि सराय, तालाब, कुआँ या स्कूल बनाएं।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो, इस संसार में कई बार प्रलय, महाप्रलय हो चुकी है। हम आंखों से बड़ी–बड़ी खंडहर हुई जगह देखते हैं कभी वह जगह आबाद थी और वहां भी लोग बसते थे। पता नहीं इस दुनिया को चलाने वाले पहले कितने ही राजा–महाराजा आए, कितनों ने और आना है। कोई नहीं जानता कि कितने बादशाह बदले और कौन इस दुनिया का बादशाह बना। जब वे नहीं रहे, यह दुनिया ही नहीं रही, दुनिया का सामान ही नहीं रहा तो सोचकर देखें कि हमारी बनाई हुई सराय, कुएं, तालाब या किले किस तरह रह सकते हैं?''

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु।
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु।।

गुरु साहब अपना तजुर्बा ब्यान करते हैं कि प्यारेयो, उनका नाम रहेगा जिन्होंने भक्ति की और गुरु से नाम लेकर नाम की कमाई की वे उस चीज़ में जाकर मिल जाते हैं, जिसने सदा कायम रहना है। इसलिए महात्मा हमें बताते हैं कि प्रभु ने हमें अपनी भक्ति करने का मौका दिया है। हम जिन्हें देवी-देवता समझते हैं, जीव जिनके आगे जाकर रोज़ मन्नत माँगता है, चढ़ावे चढ़ाता है जबकि उन्हें देखा नहीं होता, पता नहीं वे देवता हुए भी हैं या लोगों ने ऐसे ही बनाए हुए हैं।

आप प्यार से कहते हैं कि किसी पशु-पक्षी या देवता में यह ताक़त नहीं कि वे प्रभु की भक्ति कर लें। किसी को मौका ही नहीं मिला किसी के अंदर यह रास्ता ही नहीं रखा गया। अगर देवता भी परमात्मा और नाम की भक्ति करना चाहते हैं तो उन्हें भी संसार में इंसानी जामे में ही आना पड़ेगा और किसी महात्मा के चरणों में बैठकर नाम प्राप्त करके उसकी कमाई करनी पड़ेगी क्योंकि किसी और रास्ते से हमारी मुक्ति नहीं होती। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही।

'शब्द-नाम' की कमाई को छोड़कर हम किसी भी रास्ते पर चलते हैं तो अंत समय हमें पछताना पड़ता है। महात्मा हमें देवी-देवताओं की असलियत बताते हैं कि देवी-देवता वे लोग होते हैं, जिन्होंने इस संसार में आकर श्रेष्ठ कर्म और दान-पुण्य किए होते हैं। ऐसा नहीं कि पुण्य कर्मों का कुछ नहीं मिलता, परमात्मा उन श्रेष्ठ कर्मों का इनाम ज़रूर देते हैं। उन्हें स्वर्गों-वैकुंठों में भेज देते हैं, वहां लंबी उम्र हो जाती है। जब यहां के भोगों ने ही इंसान को दुखी किया हुआ है तो वहां के भोगों में हमें सुख कहाँ से प्राप्त हो सकता है? हम देवी-देवताओं की कहानियां पढ़ते हैं कि स्वर्गों के बादशाह इन्द्र ने अहिल्या का सत भंग किया। जब इंसान अपने धर्म से गिर जाता है तो वह किसी के घर की तरफ देखता है, बुराई करता है।

इसलिए महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि हम रोज चन्द्रमा के आगे सिर झुकाते हैं और महीने में कई व्रत भी रखते हैं। साथ में यह कहानी भी हमारे माता–पिता की ज़ुबान पर चढ़ी हुई है कि चन्द्रमा ने ऋषि की स्त्री के साथ भोग करने में इन्द्र का साथ दिया। अगर स्वर्गों में शांति होती वहां के लोगों को इतने बुरे कर्म क्यों करने पड़ते?

प्यारेयो, मौत–पैदाइश, ईर्ष्या–दुश्मनी वहां भी है। जिस तरह यहां लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से रोगी हुए बैठे हैं, उसी तरह स्वर्ग–वैकुंठों में भी यही रोग लगे हुए हैं। अगर हम पाप करते हैं तो हमें भूत–प्रेतों की नगरी में भेजा जाता है। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि वह योनि बहुत कष्ट दायक होती है।

प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे, नरकि पचहि अगिआन अंधेरे।

यह एक बड़ा भयानक रोग है अगर हमने मुक्ति प्राप्त करनी है तो इंसानी जामा ही इसका साधन है। परमात्मा इंसान को यह बहुमल्य दात देते हैं लेकिन हम परमात्मा को अंदर खोजने की बजाए बाहर खोजने में अपना वक्त खराब करते हैं, परमात्मा हमारे शरीर, देह और वजूद में रहते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

सरीरहु भालणि को बाहरि जाए, नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए।
सभ किछु घर महि बाहरि नाही, बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही।।

बाहर पत्थर और पानी हैं। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि जब तक हम अपने ख्यालों को बाहर से हटाकर अंदर जहां प्रभु रहते हैं, वहां एकाग्र नहीं करते तब तक हम परमात्मा से नहीं मिल सकते, उनकी भक्ति नहीं कर सकते। जिन महात्माओं ने कमाई की है, वे हमें यह भी बताते हैं कि परमात्मा के रहने की जगह हमारे शरीर के ऊपर के भाग में हमारी आँखों से ऊपर है, जिसका रास्ता परमात्मा ने खुद ही बनाया है और उसे बताने के लिए खुद ही किसी महात्मा का तन धारण कर इस संसार में आते हैं।

सन्त–महात्मा कोई नई कौम बनाने के लिए या बनी हुई क़ौमों को तोड़ने के लिए नहीं आते। वे किसी समाज को अपना घर नहीं समझते और न ही वे किसी मुल्क या जाति के कैदी होते हैं। वे सारे संसार को अपना घर समझते हैं, सब समाजों को अपना समझते हैं। उनका हर एक आत्मा के साथ प्यार होता है। वे आत्मा समझकर प्यार करते हैं, ऐसे महात्माओं की आँखें खुली होती हैं।

जब हम महात्मा के बताए मुताबिक अपने फैले ख्याल को बाहर से निकालकर आंखों के पीछे लाकर इन्द्रियों के भोगों से ऊपर आ जाते है, शब्द–नाम के साथ जुड़ जाते हैं और अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाते हैं फिर हमारी आँखें खुलती है तब हमें पता चलता है कि परमात्मा कण–कण और पत्ते–पत्ते में व्यापक हैं।

महात्मा हमसे कहते हैं कि जिनकी आँखें खुली हैं, उन्होंने तो अंदर देखकर कहा है लेकिन हम ज़ुबानी खर्च करने में लगे हुए हैं। एक–दूसरे से कहते है कि भई, परमात्मा तो सबमें ही हैं। क्या हमने कभी देखा है? अगर देखा हो तो हम उनकी खिलकत और जीव–जंतुओं से भी प्यार करेंगे। प्रभु ने जितना एक इंसान को इस धरती पर रहने का अधिकार दिया है, उतना ही एक पशु–पक्षी को भी दिया है।

क्या हमने कभी जानवरों की हालत देखी है? शिकारी उनके पीछे फिरते हैं, गोलियों से शिकार करते हैं। जखमी हुए बेचारे जानवर अपना सिर छिपाने के लिए भागते–फिरते हैं, वहां भी शिकारी ढूंढ लेते हैं। कौन सी माता है जो उनका इलाज करवाए, कौन सा पिता है जो उन्हें पानी पिला दे? कोई है जो उन जानवरों को शिकारियों से छुड़वा दे? दुनिया में ऐसी कोई कचहरी है जहाँ जाकर वे अपील कर सकें?

हो सकता है कि किसी समय वे जानवर हमसे अच्छे हों, सेठ–साहूकार हों लेकिन उन्होंने इंसानी जामें में आकर नाम की कमाई नहीं

की, परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया इसलिए आज वे पशु–पक्षियों के जामें में आकर कष्ट पा रहे हैं।

महात्मा हमें अपना तजुर्बा बताते हैं कि हमारे ऊपर संगत का बहुत असर पड़ता है अगर हम जुएबाज़ों की संगत–सोहबत में जाते हैं तो हमें जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। शराबी–कबाबियों के पास बैठते है तो हमारे अंदर भी शराब–कबाब के झौंके उठने लग जाते हैं। अगर हम चोर–ठगों की सोहबत में जाएंगे तो हमारे अंदर भी वैसी ही हरकतें पैदा हो जाएंगी, हमें भी चोरी करने या ठग्गी मारने का शौक पैदा हो जाएगा। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि इसका हर्जाना भुगतने के लिए हमें बार–बार इस देह में आना पड़ता है। क्यों न हम महात्मा के बताए अनुसार बुरी संगत को छोड़कर अच्छी संगत–सोहबत में जाएँ?

जैसी संगत तैसी रंगत।

हम जैसी संगत करेंगे हम पर वैसा ही असर होगा। गुरु साहब हमें प्यार से कहते हैं:

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ।

जिसे किसी अच्छे कमाई वाले महात्मा की संगत मिल जाती है वही तर सकता है। दिल में ख्याल आता है कि जहाँ लोग इकट्ठे हो गए, वह सतसंग ही है लेकिन जहाँ एक मज़हब दूसरे मजहब को गालियां निकालता है या भला बुरा कहता है या एक समाज दूसरे की निंदा करता है, उसे सतसंग नहीं कहते। सतसंग में न तो किसी की निंदा होती है और न ही किसी की बड़ाई होती है। अगर बड़ाई है तो परमात्मा की है और निंदा तो हमारे बुरे कर्मों की है। बुरे कर्मों का नतीजा हमें दुख, बीमारियां और बेरोज़गारी मिलती है। एक जन्म में हम खुश होकर बुरे कर्म करते हैं फिर दूसरे जन्म में उन कर्मों को भोगने के लिए आ जाते हैं। इसलिए गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ।

जब अपना किया खुद ही भोगना है तो हमें सोचकर ही कर्म करने चाहिए कि यह फल तो हमने ही खाना है। अगर हम मिर्च बोएंगे तो मिर्च खाएंगे, गन्ना बोएंगे तो गन्ना खाएंगे, गुड़ का स्वाद चखेंगे, बीज सोचकर डालें। स्वामी जी महाराज हमें प्यार से कहते है कि **सतसंग करते हुए बहुत समय हो गया है** ज़िन्दगी का बहुत हिस्सा निकल गया है लेकिन हमारे अंदर उसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार है।

महाराज जी बताया करते थे कि एक साहूकार सारी ज़िन्दगी सतसंग में जाता रहा, उसने सतसंग को एक रस्मों–रिवाज ही बना लिया था। एक दिन उसे कोई खास कारोबार था तो उसने अपने लड़के को सतसंग में जाने का मौका दिया। उसका लड़का भोला–भाला था और उसका ख्याल दुनिया में ज्यादा फैला हुआ नहीं था। महात्मा सतसंग में कह रहे थे कि हर एक के अंदर परमात्मा है, पशु–पक्षी भी परमात्मा ने बनाए हैं। हमें सबके साथ प्यार और हमदर्दी होनी चाहिए।

जब वह लड़का घर आया तो उसकी दुकान पर एक गाय आटा खा रही थी। लड़के के दिल में ख्याल आया कि बहुत ब्याज आता है, मकानों का किराया भी आता है अगर यह भूख की मारी सर्दी में थोड़ा–सा आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा। उसी वक्त बाहर से उसका पिता आ गया और कहने लगा, ''ओह अंधे के अंधे! तुझे दिखाई नहीं देता कि यह गाय कितना नुकसान कर रही है, तेरी आंखों के सामने आटा खा रही है।''

लड़के ने कहा, ''पिताजी, कितनी सर्दी पड़ रही है अगर यह गाय थोड़ा–सा आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा? हमें कितना ब्याज आता है, कितना किराया आता है, हमारी कितनी आमदनी है।'' साहूकार ने कहा कि तुमने ऐसी शिक्षा कहाँ से ली है? लड़के ने कहा, ''आज आपने सतसंग में भेजा था वहां महात्मा कह रहे थे कि हर जीव के साथ

प्यार करना चाहिए और दया करनी चाहिए।'' साहूकार ने कहा, ''ऐसी बातें वहीं छोड़ आनी चाहिए, मैं तीस साल से सतसंग में जा रहा हूँ अगर मैं ऐसी बातें पकड़ लेता तो तेरे लिए कुछ भी नहीं बना पाता, आज हम उजड़ चुके होते।'' महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि हमें इस तरह नहीं करना चाहिए कि धोती झाड़ी और घर चले आए। हमने सतसंग सुनकर एक-एक करके अपने ऐबों को छोड़ना है।

मैं बताया करता हूँ कि हमारे गाँव का एक हिन्दू जाति का खास मूल निवासी था। वह दुकान करता था, हमारा बहुत प्रेम था, वह गंगा की काफी तारीफ़ करता था और मुझे साथ चलने के लिए कहता। मेरे दिल में ख्याल आया अगर मैं इसके साथ गंगा पर नहीं गया तो यह उदास हो जाएगा। मैंने उससे कहा कि हम चलेंगे, मौका आया तो हम वहां चले गए।

उसने वहां मेरे साथ सलाह की और भी कई पंडितों से पूछा कि यहाँ क्या छोड़ना चाहिए? मैं एक बार यहाँ अपने पिता की अस्थियाँ विसर्जन करने आया था तो उस समय मैंने बैंगन छोड़ दिया था। मैं इस बार केला छोड़ जाऊं? मैंने उससे कहा कि तू कम तोलना छोड़ दे। उसने कहा कि यह तो मैं नहीं कर सकता। अब आप सोचकर देख सकते हैं कि हम कोई ऐब छोड़ने के लिए तैयार नहीं। आप बैंगन और केला खाएं, सब्जी का क्या कसूर है? आप ऐसी चीज़ें छोड़ देते हैं और कहते हैं कि देखो जी, हम तो मसर की दाल नहीं खाते।

सतसंग में जाने का तभी फ़ायदा है हम वहां जो सुनते हैं, उसे पल्ले बांधकर लाएं,उस पर अमल करें तभी हमारा जीवन सुधर सकता है। स्वामी जी महाराज इस शब्द में हमें बहुत प्यार से सतसंग के बारे में बताते हैं:

सतसंग करत बहुत दिन बीते, अब तो छोड़ पुरानी बान।
कब लग करो कुटिलता गुरु से, अब तो गुरु को लो पहिचान।

जिस तरह प्रभु परमात्मा सदा कायम हैं, अंतर्यामी हैं और घट–घट की जानते हैं उसी तरह उनकी भक्ति करने वाले भी जाकर उनमें मिल जाते हैं। वे भी सदा कायम रहते हैं और अंतर्यामी होते हैं। महात्मा को जीवों के एक जन्म की नहीं बल्कि जन्म–जन्म की अंतर्यामता होती है लेकिन महात्मा पर्दापोश होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी पेशावर का एक वाकया सुनाया करते थे वहां एक औरत थी, जो बड़ी बेधड़क थी। जब उस गली से कोई मर्द निकलता तो वह कहती, ''तू फलानी औरत के पास से आया है।'' जब कोई औरत उस गली से निकलती तो वह कहती, ''तू फलाने मर्द के पास जाती है।'' धीरे–धीरे लोगों ने उस गली से गुजरना बंद कर दिया कि इस औरत के सामने से क्या जाना है इस औरत ने तो इसी तरह कहते रहना है।

महात्मा पर्दापोश होते हैं वे सब कुछ करते हुओं के ऊपर भी पर्दा डालते हैं। जब हम गुरु के पास जाते हैं अगर गुरु भी हमारे ऐब बताने लगें तो हम कभी भी फायदा नहीं उठा पाएंगे। बुरा करते–करते बहुत ज़िन्दगी हो गई अब हम बुराई कब छोड़ेगे?

एक महात्मा के दो सेवक थे, महात्मा ने सोचा कि मेरे पीछे दोनों लड़ेंगे कि यह जगह मेरी है। मैं जीते जी इनको समझा जाऊं कि कौन काबिल है। महात्मा ने दोनों को दो जानवर दे दिए और कहा कि तुम बाहर जाकर इन्हें कत्ल करके लाओ लेकिन याद रखना कि वहां कत्ल करना जहाँ कोई न देखता हो।

पहला सेवक बहुत चतुर था, उसने सोचा कि गुरु को क्या पता है, यह भी मेरे जैसा ही इंसान है। वह थोड़ा–सा एक तरफ हुआ और उसने जानवर को कत्ल करके गुरु को पकड़ा दिया कि लो महात्मा जी, मैंने इसे वहां कत्ल किया है जहां बिल्कुल कोई नहीं देख रहा था। महात्मा जानते थे और कहने लगे, ''कोई नहीं भई, बैठ जा।''

दूसरा सेवक बहुत देर तक बाहर घूमता रहा, उसने अपनी आँखें भी बंद की और अँधेरी जगह में भी गया लेकिन उसे हर जगह 'शब्द रूप' गुरु नज़र आए। वह देखता था कि मेरी बंद हुई आंखें क्या करेंगी जब देखने वाले देख रहे हैं। गुरु ने मुझसे यह कहा था कि बेटा उस जगह कत्ल करना जहाँ कोई न देखता हो लेकिन ऐसी कोई जगह नहीं है।

आखिर उस सेवक ने वह जानवर वापिस लाकर महात्मा को दे दिया और कहा, ''महाराज जी, मुझे ऐसी कोई जगह नहीं मिली कि जहाँ पर कोई देखता न हो। आप 'शब्द रूप' होकर परछाई की तरह मेरे साथ थे। यह आपका जानवर है।'' महात्मा का दोनों को समझाने का यही मतलब था कि मेरी तालीम को कौन समझता है।

महात्मा कहते हैं कि सारी ज़िन्दगी सतसंग में जाते हुए, गुरु की सोहबत करते हुए निकल गई। भले मानस, तू अब तो पहचान ले कि वे अंतर्यामी महापुरुष हैं जिन्हें परमात्मा ने भेजा है ये तेरे लिए हमदर्दी रखते हैं।

गुरु को तुम मानुष मत जानो, वे हैं सतपुरुष की जान।

महात्मा बताते हैं कि वे इंसान नहीं पर इंसानों में रहने के लिए ज़रूर आ गए हैं। महाराज जी पीटर-द-ग्रेट की मिसाल दिया करते थे कि रूस में कुछ आदमियों को देश निकाला दिया था। रूस का बादशाह हॉलैंड में जहाजों का काम सीखने के लिए गया। जब वे आदमी बादशाह से मिले तो बादशाह ने उनसे पूछा कि आप कहाँ से हैं? उन आदमियों ने बताया कि हम रूस के हैं। बादशाह ने कहा कि मैं भी वहीं से हूँ। एक मुल्क के होने की वजह से और रोज़ साथ रहने से उनका प्यार हो गया।

जब बादशाह का कोर्स पूरा हुआ तो बादशाह ने कहा कि आप मेरे साथ चलें। उन आदमियों ने कहा कि हम वहां जुर्म कर बैठे थे और वहां के बादशाह ने हमें देश निकाला दिया हुआ है। बादशाह ने कहा कि मेरी वहां के बादशाह के साथ दोस्ती और प्यार है। मैं आपको उससे माफ़ करवा

दूंगा, आप मेरे साथ चलें। आखिर रोज़ की सोहबत थी, उन आदमियों के दिल में ख्याल आया कि यह आदमी तो अच्छा दिखता है। शायद इसकी उस बादशाह के साथ मुलाकात हो और हमें माफ़ करवा दे।

जब वापिस आए और अगले दिन बादशाह के सामने पेश हुए तो वही बादशाह था जो उनके साथ मज़दूरों के भेष में काम सीखता था। फिर उन्हें पता चला कि ओ हो! हमें यह मालूम होता कि हमारा बादशाह ही हमारे साथ काम कर रहा है तो हम भी इसकी इज़्ज़त करते इसी तरह सन्त–महात्मा प्रभु की तरफ से भेजे जाते है, वे प्रभु का दिल होते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा था:

मै अपना सुत तोहि निवाजा।

हे प्रभु, मैं आपका राज छोड़कर कैसे जाऊं? प्रभु ने उन्हें अपना बेटा बनाकर इस संसार में भेजा। इसी तरह हर महात्मा उस मालिक के हुक्म में आते हैं। उनमें इस संसार के लिए बड़ा ही दर्द होता है इसलिए आप कहने लगे वे सतपुरुष की जान हैं।

जैसे तैसे मन समझावो, धर परतीत करो उन ध्यान।

आप कहते हैं कि जिसने परमार्थ में तरक्की करनी है, ज़रूरी है कि उसे श्रद्धा भी बनानी पड़ती है, प्रतीत भी करनी पड़ती है। जो प्रतीत करेगा प्रीत उसके अंदर ही पैदा होगी इसलिए आप प्यार से कहते है कि यह परमार्थ की पहली कुंजी है, पहला स्टेप है।

दया मेहर से बचन सुनावें, वे हैं पूरन पुरुष अनाम।।

आप कहते हैं कि वे अपने शरीर की फिक्र नहीं करते, वे बड़ी भारी दया लेकर आते हैं। वे अपने अमोलक वचन और टाइम जो उनके पास होता है, आकर जीवों के ऊपर खर्च करते हैं। पहले वे भजन–अभ्यास करते हैं गुरु की खोज करते है। ज़िन्दगी में अपने वक्त को बहुत कीमती

समझकर प्रभु की तरफ लगाते हैं। जब वे पूर्ण हो जाते हैं तो मालिक उनकी ड्यूटी लगा देते हैं फिर मालिक ने उन्हें जिस काम के लिए भेजा होता है, वे उस काम को बहुत प्यार और नम्रता के साथ ड्यूटी समझकर निभाते है, वे पूर्ण बर्तन होते हैं।

धरी देह मानुष की गुरु ने, ज्यों त्यों तेरा करें कल्यान।।

आप प्यार से कहते है कि वे इंसानों में इंसान बनकर ज़रूर आए हैं लेकिन जैसा भी उन्हें ठीक लगेगा, वे ज़रूर आपका कल्याण करेंगे और आपसे भक्ति करवाएंगे। कई लोग हमारे सतगुरु के आगे जाकर शिकायत करते थे कि फलाना आदमी शराब पीने लग गया है, फलाना आदमी इधर चला गया, इस तरह नहीं होना चाहिए था।

महाराज जी कहा करते थे कि देखो भई, जिसने नाम दिया होता है, उसे सारा फिक्र होता है। गुरु अपने हाथों से डोर नहीं छोड़ते, ढीली ज़रूर कर देते हैं। हमें यह भी पता है कि जब डोर खींचते हैं तब हम रोते-कुरलाते है कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि जिसने तुम्हारी जिम्मेदारी ली है, वे तुम्हें छोड़ नहीं सकते।

मैं गुरु गोबिंद सिंह जी का वाकया सुनाया करता हूँ कि जब आनन्दपुर साहिब में गुरु साहब पर कष्ट आया तो मालपूए खाने के वक्त तो बहुत लोग उनके साथ थे लेकिन जब कष्ट आया तो माझा की संगत के बहुत से लोग कहने लगे कि ये तो रोज ही लड़ाई छेड़े रखते हैं, हम इन्हें छोड़कर चलते हैं। गुरु साहब ने कहा कि आप एक शर्त पर आ जा सकते हैं कि आप लिखकर दे जाएं कि हम आपके सिख नहीं। वे बड़ी खुशी के साथ लिखकर अपने दस्तखत करके दे आए।

गुरु साहब ने श्री आनंदपुर साहिब में बहुत सामान छोड़ा, चमकौर में भी काफी घमासान जंग की, कष्ट उठाए लेकिन वह कागज़ साथ लेकर आए और उसे अपने पास ही रखा, वहां से श्री मुक्तसर साहिब आ गए।

जब माझा की संगत के प्रेमी घर आए तो उनके घरवालों और उनकी औरतों ने बहुत ताने मारे कि तुम हमारे वाले कपड़े और चूड़ियां पहन लो, हमारी जगह अन्न-पानी तैयार करो। जो आदमी गुरु से बेमुख हो गए, जो गुरु के ही नहीं बन सके तो वे किसके बन सकते हैं? हम तुम्हारी शक्ल देखने के लिए भी तैयार नहीं। उनके दिल में ख्याल आया कि हमें तो लानतें पड़ रही हैं तो आगे क्या होगा। जब वहां से जाने लगे तो माता भागो ने उन्हें समझाया कि आओ, मेरे साथ चलो।

भाई महा सिंह उनका जत्थेदार बना और टिब्बी साहिब आकर मुग़ल आर्मी के साथ उनकी बड़ी घमासान जंग हुई। गुरु साहब सारा नजारा टिब्बी पर ऊंची जगह बैठकर देख रहे थे। जब जंग खत्म हो गई तो गुरु साहब आए। वहाँ माता भागो और भाई महा सिंह सहक रहे थे। गुरु साहब ने रूमाल के साथ उनका मुंह पोंछा और भाई महा सिंह से पूछा, ''क्यों भाई प्यारेया, क्या हाल है?'' उसने कहा, ''जी अच्छा है, यही विनती है कि जैसे गुरु हमें मिले है वैसे ही सबको मिलें।''

गुरु साहब ने कहा कि क्या मांगते हो, आपको क्या दें? वह कहने लगा, ''न मुझे राज-पाट की ज़रूरत है और न किसी हुकूमत की ज़रूरत है। अगर ज़रूरत है तो आप हमारा बेदावे वाला कागज़ फाड़ दें।'' गुरु साहब ने कहा, ''महा सिंह, तू कुछ और मांग ले।'' उस कागज़ में आप मुझे जरूर लिखकर दे आए थे कि हम आपके सिख नहीं लेकिन मैंने तो यह नहीं लिखा कि मैं आपका गुरु नहीं हूँ। लो मैं वह बेदावा फाड़ देता हूँ।

गुरु कभी भी यह नहीं कहते कि यह मेरा सेवक नहीं है। वे हमेशा हर सांस के साथ हमारी बेहतरी सोचते हैं कि कब यह मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आएगा और 'शब्द-नाम' की भक्ति करेगा।

सेवा कर पूजा कर उनकी, उनहीं को गुरु नानक जान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि महात्मा दो नहीं होते, वे प्रभु के दरबार में एक होते है। वही नानक, वही कबीर और वही सब सन्त इस संसार में आए। जब उस वक्त प्रभु को अपने प्यारों को इंसानी जामे में भेजने की जरूरत थी तो आज भी है। तू उसी तरह उनके साथ प्यार-मोहब्बत कर और उनके दिए हुए नाम की कमाई कर।

वो ही कबीर वो ही सतनामा, सब संतन को वहीं पिछान।।

आप कहते हैं कि कबीर कोई और नहीं थे, सतनाम कोई और नहीं थे। कबीर साहब कहते हैं:

जो कोई साध सों अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं।

सब सन्त-महात्मा सतनाम के समुद्र की लहरें होती हैं, आत्मा उनकी बूँदें होती हैं। समुद्र भी पानी है, लहर भी पानी है, बूँद भी पानी है फर्क बिछोड़े का होता है। सन्त-महात्मा भी समुंद्र में मिलकर समुंद्र बन जाते हैं और हमारी आत्मा को भी प्यार से अपने में मिलाकर समुंद्र बना लेते हैं।

तेरा काज उन्ही से होगा, मत भटके तू तज अभिमान।।
चूके मत औसर अब पाया, बढ़कर इन से कोइ न मिलान।।

आप प्यार से कहते हैं कि इसी मान ने तुम्हें पहले बर्बाद किया था क्योंकि हम जीव धार्मिक कानून के पाबंद होते हैं। महाराज सावन सिंह जी सतसंग करने लगे तो कुछ आदमियों ने कहा, ''हम स्वामी जी महाराज की बानी नहीं सुनेंगे। हम तो गुरु नानक देव जी की बानी सुनेंगे।'' महाराज जी ने हंसकर कहा, ''भई, यह तो ठीक है लेकिन हमें सब सन्तों की बानी के साथ प्यार करना चाहिए। सब सन्त एक ही उपदेश करते हैं, सब सन्त प्रभु के प्यारे होते हैं, हमें भी प्रभु का प्यारा बनना चाहिए।'' आज तक इस संसार में जितने भी ऋषि-मुनि आए, सबकी पिक्चर हमारे जैसी है। उनके भी नाक, होंठ, मुंह थे, वे भी इंसान की शक्ल धारण करके आए थे।

जो बच्चा आज से तीन–चार सौ साल या दो युग पहले हुआ था, उसे भी माता–पिता की परवरिश की और दूध की ज़रूरत थी इसी तरह जो बच्चे उनके बाद पैदा हुए उन्हें भी माता–पिता की या दूध की ज़रूरत थी। अगर प्रभु को पहले अपने प्यारे संसार में भेजने की ज़रूरत थी कि जीवों को लाकर नाम–शब्द के साथ जोड़ें तो आज भी ज़रूरत है आगे भी परमात्मा के प्यारों की ज़रूरत रहेगी। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूँ।
वक्त गुरु को मान तेरे भले की कहूँ।।

सन्त यह नहीं कहते कि आज हैं, कल नहीं होंगे क्योंकि उन्होंने मुक्ति नाम में रखी है। यह हम पेट प्रचारक लोग ही होते हैं जो पेट की खातिर लोगों को प्रभु की भक्ति से हटा देते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे।

आदि–जुगादि सदा ही गुरु की पीढ़ी, गुरु का रास्ता न बंद हो सकता है और न ही होगा। जो कौम और मुल्क यह कहते हैं कि अब कोई महात्मा नहीं हो सकते और हमें किसी गुरु पीर की ज़रूरत नहीं है। हम तो यही कहेंगे कि उनके दिल में अभी परमात्मा से मिलने का शौक और बिरह पैदा नहीं हुई। जब हम महात्माओं की लेखनियाँ पढ़कर देखते हैं तो उनका तुक–तुक, पन्ना–पन्ना गुरु, नाम और सतसंग की महिमा करता है।

जो अब के तू गुरु से चूका, तौ भरमेगा चारों खान।

प्रभु के प्यारे सन्त भी देह में आए हैं और तू भी इंसान के जामे में आया है अगर तुमने इस अवसर से फ़ायदा नहीं उठाया तो कभी कीड़ा–पतंगा बनेगा या कभी सांप बनकर रेंगता फिरेगा, जहर और तंग करेगी क्योंकि सांप में ज़हर होती है इसलिए इस मौके से फ़ायदा उठा।

फिर ऐसे गुरु मिलें न कबही, मान मान तू अबही मान।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आज हमने फ़ायदा नहीं उठाया तो प्रभु कुल मालिक खुद कर्ता–धर्ता हैं। वे हमें किसी ऐसी जगह या किसी ऐसी कौम में जन्म दे दें, जहां भक्ति करने की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं है। ऐसी बड़ी कौमें हैं जो दिन–रात मीट–शराब में ही लगे रहते हैं, इस तरफ आते ही नहीं। उन्होंने झोंपड़ी कभी कहीं डाली हुई है, कभी कहीं डाली हुई है। परमात्मा ने आपको जो अवसर दिया है, उसे हाथ से न जाने दें और इसका फ़ायदा उठाएं।

पढ़ पढ़ पोथी गा गा साखी, क्यों मन में तू धरता मान।

हमें पोथी पढ़ने का अहंकार है कि हम एक घंटे में या दो दिनों में इतना पढ़ लेते हैं। पढ़ने या पढ़ाने का तभी फायदा है जब हमारा दिल नरम हो जाए, हमें यह समझ आए कि हम क्या पढ़ रहे हैं, हमारे अंदर क्या कमियां है और उन कमियों को कैसे दूर करना है?

मैंने अपने गुरुदेव से पूछा कि महाराज जी, हम दिन–रात श्री अखंड पाठ करते है, क्या इसका कोई फ़ायदा है? महाराज जी ने कहा, ''हाँ, इसका फ़ायदा तभी है अगर हम श्री अखंड पाठ के कहे मुताबिक करें नहीं तो पढ़ने वाला और पढ़ाने वाला भी खाली रह जाता है और पास में बैठकर सुनने वाला भी खाली रह जाता है।'' हमने आजकल रस्मों–रिवाज बनाया हुआ है। भाई बेचारा घर में पाठ पढ़ रहा है और हम सिनेमा में फिर रहे होते हैं या खेतों में कारोबार कर रहे होते हैं। बानी में गुरु साहिबानों ने हमारी कमियां बताई हैं और सतसंग पर ज़ोर दिया है।

जब हमारे सतगुरु महाराज जी इस संसार से अलोप हुए तो मेरे दिल को काफी चोट लगी। मैं उस समय कई जगह अलोप हुआ क्योंकि काफी पार्टियां बनी हुई थीं और पार्टियों के लोग मुझे खींच रहे थे लेकिन मैं उस तरफ जाना नहीं चाहता था। मैंने पंजाब के एक गाँव किल्लेयां वाली मे ऐसी जगह चुनी जहाँ मुझे कोई नहीं जानता था।

आपको पता ही है कि ऐसे वक्त में जब कोई आपको न जानता हो तो किसी मस्जिद, डेरे या गुरुद्वारे का सहारा लेना पड़ता है। उस गाँव में किसी की मौत हो गई तो उन लोगों ने मुझसे कहा क्या आप पाठ कर देंगे? मैंने कहा जैसे आपकी मर्जी मैं पाठ कर देता हूँ। अगर मैं उन्हें जवाब देता तो वे पहले ही मेरे ऊपर इल्जाम लगा रहे थे कि यह सी.आइ.डी. का अफसर है न किसी के घर जाता है न किसी से कोई चढ़ावा लेता है।

घरवालों ने मुझे चौबारे में जगह दे दी और कहा, ''आपको यहाँ कोई नहीं बुलाएगा और न ही कोई आपके पास आएगा।'' मैंने कहा कि मैं इस बात से खुश हूँ। उन्होंने कहा कि आपको खाना समय पर मिल जाएगा। मैंने कहा कि मैं इसकी शिकायत नहीं करता कि खाना मिले या न मिले। मैं अपना दरवाज़ा बंद कर लेता, वहाँ पाठ करता और अपना भजन-अभ्यास करता रहा।

जब आठ दिन हुए तो घरवालों ने मुझसे कहा कि हमारा विचार है कि नीचे जाकर भोग डाला जाए, सब तो ऊपर नहीं आ सकते। मैंने हंसकर कहा कि जहाँ आपकी मर्जी है वहाँ भोग डलवा लें। जो मुझसे पूछने आया था मैंने उस इंसान से प्यार से पूछा क्या तुम्हें इसका फ़ायदा हुआ, तुम मेरे पास कभी नहीं आए, तुम्हें पता नहीं कि मैंने पढ़ा या क्या किया? वहां का एक मेम्बर था, जब हम चौबारे में पाठ पढ़ने लगे तो वह मुझसे कहने लगा, ''सन्त जी, मैं इसी चौबारे में पढ़ने लगा था, मुझसे तो यह पढ़ा नहीं गया।'' मैंने कहा कि तुम्हें क्या ऐतबार है कि मैं सारा पढ़ दूंगा? वहां के काफी लोग यहां बैठे हैं, यह बात करते हुए मुझे हंसी आती है। यह हमारे साथ बीती हुई कहानी है। इसलिए महात्मा कहते हैं कि सारा पढ़ लिया तो क्या फ़ायदा है अगर आधा पढ़ा तो क्या फ़ायदा है?

महाराज सावन सिंह जी ने काफी सारे पाठी रखे हुए थे। किसी परिवार वालों ने कहा कि महाराज जी के डेरे से पाठी ले आएं। वहां के

पाठी पाठ पढ़ते और समझाते। अब हम लोगों के लिए मुश्किल होता है कि बैठकर पाठ सुनें। परिवार के लोगों ने कहा, ''बाबाजी, आप इसे पढ़ दें।'' पाठी ने कहा ,''मैंने खत्म ही नहीं करना।'' वह पाठी उनके घर में चार-पांच महीनें तक रहा, जब उसने पाठ खत्म नहीं किया तो घरवाले परेशान होकर महाराज सावन सिंह जी के पास गए और उनसे कहने लगे, ''बाबाजी, आप पाठी से कहें कि वह पाठ खत्म करें।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि खत्म करने के लिए तो हमने भेजा ही नहीं है, पाठ भी कभी खत्म हुआ है? महात्मा किसी पाठ की निंदा नहीं करते, वे तो कहते है कि आप बैठकर पढ़ें, अपनी कमियां देखें फिर उस पाठ पर चलें।

पढ़्या इल्म अमल न कीता, पढ़ेया फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी ना गवाई, मथा फेर घसाया की।।

इसी मान ने ख्वार किया है, यही मान अब करता हान।।

आप कहते हैं कि इसी मान और अहंकार ने योनियों में डाला है। आज फिर वही अहंकार हमारे आगे आकर खड़ा हो गया है। अहंकार को तो पोथी पढ़कर कम करना था, इससे छुटकारा प्राप्त करना था लेकिन यह तो और ऊपर चढ़ गया।

ता ते प्यारे कहूँ बुझाई, यह इस्तिगना भली न जान।।

स्वामी जी महाराज कहते है कि मैं आपको बार-बार समझा रहा हूँ कि आपकी यह लापरवाही अच्छी नहीं है क्योंकि पहले लापरवाहियाँ की तो इस रोगी संसार और दुखों की नगरी में आए। यहां कोई सुखी नहीं बस! एक दूसरे का पर्दा ही होता है। जो ज़्यादा सुखी नज़र आता है, वह बेचारा भी फोड़े की तरह भरा होता है।

हमें पता ही है कि किसी के बच्चा नहीं होता तो वह दिन-रात तड़पता फिरता है। जब बच्चा हो जाता है और वह कहना न माने या प्रभु उसे वापिस बुला लें तो आप देखें उन माता-पिता को कितना कष्ट होता है।

शादी होती है, बाजे बजते है, एक दूसरे को बधाइयाँ देते है, बड़ी खुशी होती है अगर दूसरे दिन उस पत्नी या पति के साथ अभाव आ जाए तो वह घर नरक बनकर रह जाता है। किसी को कर्ज़ा लेने का दुख है, किसी को कर्जा देने का दुख है। कोई बीमारी के हाथों तंग है, कोई बेरोज़गारी के हाथों तंग है। गुरु नानक देव जी महाराज कहते है:

संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना।

सारा संसार ही रोगी है, हम रोगी संसार में आए हुए हैं लेकिन हम आज भी नाम की दारु लेने और शब्द की कमाई करने के लिए तैयार नहीं।

जल्दी करो कपट को छोड़ो, सरधा भाव बढावो आन।।

महात्मा हमें बताते है कि हम प्लानिंगें ही करते हैं कि बाद में भजन करेंगे या सुबह करेंगे या शाम को करेंगे। रात को उठते हैं तो कहते हैं कि रात बड़ी है, चलो थोड़ी देर और लेट लेते हैं, बाद में भजन कर लेंगे या कहते हैं कि जब बच्चे बड़े हो जाएंगे तब करेंगे। उस वक्त भी आपके पास वही मन होगा, वह फिर वही सलाह देगा। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल।
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु।।

हम नहीं जानते कि हमारे लिए प्रभु की क्या प्लानिंग है? गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात।

हम किसी तरफ जाते हैं लेकिन परमात्मा हमें किसी और तरफ ले जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

अपने चितवा मैं करा।

मैं अपना सोचा हुआ करता हूँ लेकिन प्रभु वह करते हैं जो मेरे भले के लिए है। आपको जो वक़्त मिला है आप उससे फ़ायदा उठाएं।

इतने पर मन कहा न माने, तौ फिर अपनी तू ही जान।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सन्त–महात्माओं ने इतनी मेहनत करके धर्म–ग्रंथ लिखे और सतसंग किए अगर फिर भी हमारा मन इस तरफ नहीं आता तो प्यारेया, तू अपना आप ही समझ कि प्रभु या धर्मराज के आगे जाकर क्या करेगा, तेरा वहां क्या बल चलेगा?

सिर पर तेरे हुकुम काल का, ताँ ते मन तेरा नहिं मान।

कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ने से पता चलता है कि काल ने एक बार सत्तर युग और दूसरी बार चौंसठ युग एक टांग पर खड़े होकर प्रभु की सख्त भक्ति की। गुरु नानक साहब कहते हैंः

गुप्त भुज्जे जुग चतारे।

हम यह भी नहीं कह सकते कि वास्तव में काल ने इतने युग भक्ति की है या इससे भी ज़्यादा की है। काल ने कुल मालिक सतपुरुष को अपने ऊपर खुश कर लिया और उनसे जीव मांग लिए। स्वामी जी महाराज उस समय का नज़ारा लिखते है कि काल ने सतपुरुष से कहा:

रचना रचूँ और मैं न्यारी, यह रचना मोहिं लगे न प्यारी।

हे प्रभु, आपकी सच्चखंड की यह रचना मुझे अच्छी नहीं लगती, मैं तो अपनी रचना रचूंगा। मुझे ऐसा द्वीप दें जहाँ जाकर मैं आपकी दी हुई आत्माओं को आबाद कर सकूं। वहां मेरा हुक्म हो, मैं चाहूँ तो किसी की खाल निकलवाऊं या किसी को उल्टे रास्ते पर डालूं कोई मुझसे सवाल न पूछे। किसी को यह पता न हो कि मैं पिछले जन्म में क्या था और मुझे यह कष्ट किस बात के मिल रहे हैं। सतपुरुष ने खुश होकर ये आत्माएं बख़्श और द्वीप बख़्श दिया। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सुरत बुन्द सत सिंध तज, आई दसवें द्वार।
वहाँ से उतरी पिंड में, बसी आय नौं वार।

मन इन्द्री सम्बन्ध कर, पड़ी जगत की लार।
मन बैरी धोखा दिया,तजे न मूल विकार।
संशय रोग भरमत रही,क्यों कर उत्तरे पार।।

काल ने मन को अपना एजेंट बनाया और हर एक के साथ लगा दिया कि कोई जीव गुरु भक्ति न कर पाए। किसी को अपने देश का पता ही न चले कि मेरा कौन सा देश है, मेरी कौन सी कौम है। आप प्यार से कहते हैं कि तेरे सिर पर काल का हुक्म है, वह तुझे यह हुक्म मानने नहीं देता, 'शब्द' की तरफ नहीं आने देता।

एक बात जानी हम भाई, है तू बढ़का बे–ईमान।

अब आप कहते हैं कि हमारी समझ में यह आया है कि परमात्मा ने तुझे चौरासी लाख जीया–जून का सरदार बनाया, तुम्हारे अंदर बुद्धि रखी, तन दिया, तंदुरुस्ती दी और तुम सब कुछ उस प्रभु का पाकर कहते हो कि प्रभु कहाँ है? मैं उनकी भक्ति नहीं करता। इससे ज़्यादा बेईमानी और क्या हो सकती है। स्वामी जी महाराज को कितना सख्त लफ्ज लिखना पड़ा। कभी–कभी सन्त–महात्मा बहुत सख्त भी लिख देते हैं।

लगा रहेंगा संग में गुरु के, सहज सहज शायद मन मान।
राधास्वामी कहै बुझाई, ऐसे जीव होयँ हैरान।।

स्वामी जी महाराज कहते है, ''अगर तुम गुरु भक्ति में लगे रहोगे, रोजाना गुरु के सतसंग में जाते रहोगे तो हो सकता है कि तुम्हारा मन भी मान जाए। पता नहीं कि महात्मा के कौन से लफ़्ज़ ने हमारे ऊपर असर कर जाना है और हमारी जिंदगी पलटकर रख देनी है।''

स्वामी जी महाराज अपना तजुर्बा बताते है, ''अगर तू इस तरफ लगा रहेगा, मन को गलतियां बताता रहेगा तो हो सकता है कि तेरा मन मान जाए और समझ जाए।''

***

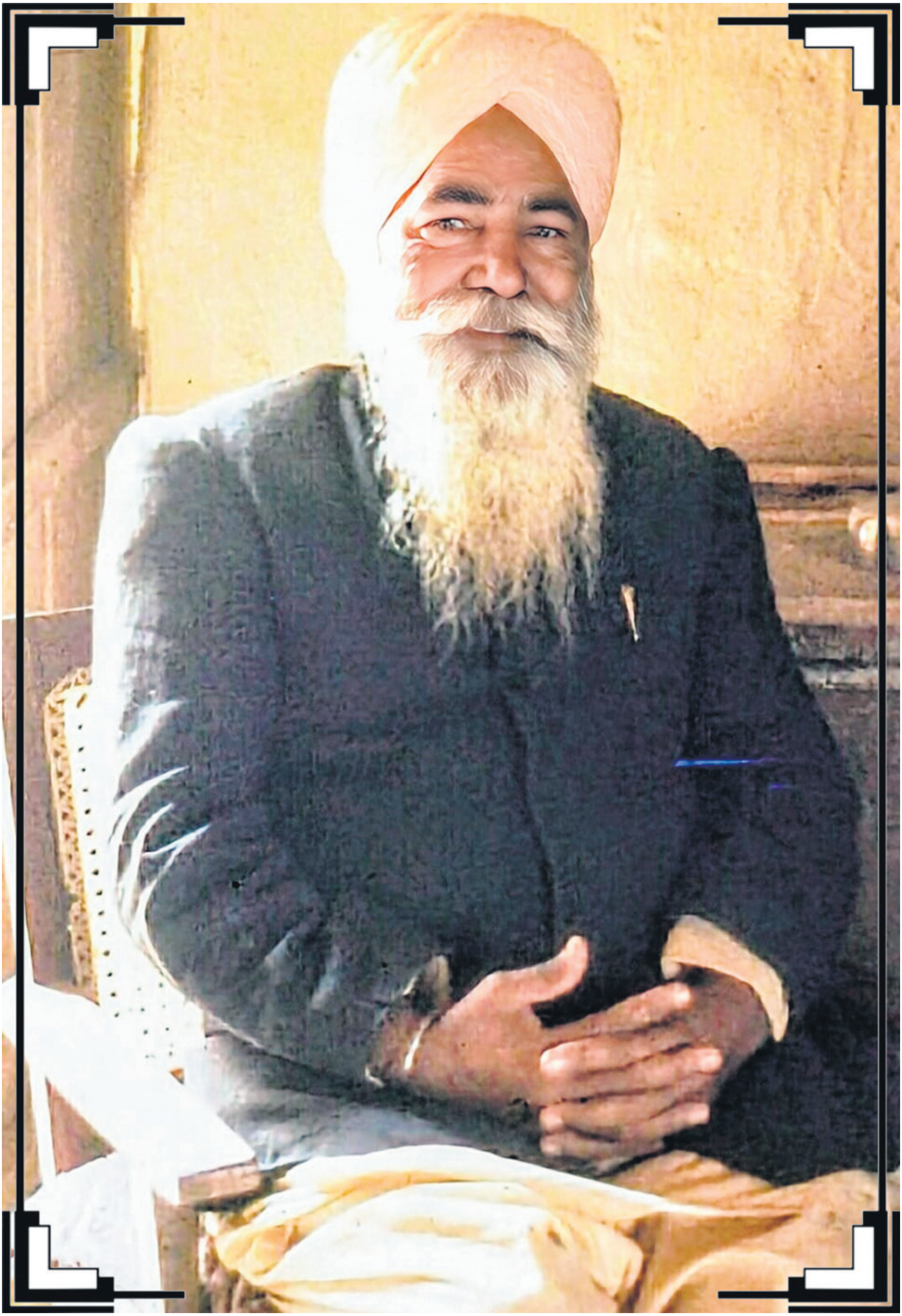

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

भजन-सिमरन कब करना चाहिए

10 मई 1977 सनबोंटन, अमेरिका

एक प्रेमी: *मैं जब अभ्यास कर रही होती हूँ तो कई बार मेरी टाँगें कांपने लगती है। क्या यह शारीरिक कमजोरी की वजह से है या रूह के सिमटाव की वजह से है?*

बाबा जी: अभ्यास में बैठने पर जब इस तरह की कंपकंपी छिड़े तो यह आत्मा के सचखण्ड की तरफ जाने की शुरुआत है लेकिन सिमरन की कमी के कारण आत्मा ऊपर नहीं उठ रही होती इसलिए टाँगें कांपनी शुरू हो जाती हैं।

एक प्रेमी: *जब मेरा ध्यान नीचे की तरफ गिरता है तो मैं अपने ध्यान को ऊपर ले जाने की कोशिश करती हूँ लेकिन तब मेरी आँखें भी खुलने लगती हैं। मैं सिमरन करने की ज्यादा कोशिश करती हूँ। मुझे और क्या करना चाहिए?*

बाबा जी: मैं रोज ही कहा करता हूँ कि भजन में बैठे हुए जिन लोगों की आँखें खुलती हैं उन्हें अपनी आँखों पर कपड़ा बाँधना चाहिए क्योंकि हमें बाहर देखने की आदत है इसलिए शुरु-शुरु में आँखें बंद करना बहुत जरूरी है। जब तक हम उस ताकत को अंदर देख न लें तब तक बाहर देखने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

जो एक बार अंदर देख लेता है उसे पत्ते-पत्ते में वह ताकत काम करती हुई दिखाई देती है। वह सारे विश्व को अपना मानता है उसके लिए कोई पराया नहीं है। उसे रोज़ाना चौंकड़ी लगाकर बैठना या आँखें बंद करने की ज़रुरत नहीं पड़ती। कबीर साहब तो यहाँ तक कहते हैं:

माला फेरूं ना हरि भजू, मुख से कहूँ ना राम।
मेरा राम मुझे भजे मैं करूँ विश्राम।

जब एक बार अभ्यास करके अपनी आत्मा को उस प्रभु में लीन कर लिया तो अब मैं न मुंह से राम कहूंगा और न माला फेरूंगा। मेरा वक्त आराम करने का है, अब भगवान मुझे याद करें। आप तो यहाँ तक कहते हैं:

आंख न मूंदौं कान न रूंधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नैन पहिचानौं हंसि हंसि, सुंदर रूप निहारौं।

अब मुझे काया को कष्ट देने और आँखें बंद करने की ज़रुरत नहीं है, मैं खुली आँखों से प्रभु को देख रहा हूँ। जब कॉलेज से डिग्री मिल जाए फिर कॉलेज के चक्कर काटने की ज़रुरत नहीं पड़ती। जब हम भजन–अभ्यास करके प्रभु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं फिर हमारा रोज़–रोज़ का बैठना या मन के साथ संघर्ष करना खत्म हो जाता है।

हम मानते हैं कि सन्तमत में शुरू–शुरू के अभ्यास थोड़े मुश्किल होते है क्योंकि हमारे मन को एकाग्र होने की आदत नहीं होती, हमें दुनिया का सिमरन करने की प्रबल इच्छा रहती है। शुरू–शुरू में हमें सतगुरु द्वारा बताए हुए भगवान के सिमरन की आदत नहीं होती लेकिन जब हमें बैठने और सिमरन करने की आदत पड़ जाती है, उस वक्त सन्तमत की बाकी मंज़िलें उतनी मुश्किल नहीं लगती जितना कि हमें पहले–पहले मन के साथ संघर्ष करना पड़ता है।

अफ़सोस है कि कईयों को नाम प्राप्त किए हुए दस–बीस साल हो गए हैं और कईयों को तो महाराज सावन सिंह जी से नामदान प्राप्त किए हुए चालीस साल हो गए लेकिन उन्होंने अभी तक अपने मन को सिमरन करके एकाग्र करना ज़रूरी नहीं समझा। होना तो यह चाहिए कि जिस लगन और प्यार के साथ नामदान प्राप्त किया है, हमें सबसे पहले उसे पहल देनी चाहिए।

एक प्रेमी: *मैं आपको और महाराज कृपाल को चमकारों में देखता हूँ लेकिन ऐसा क्यों है कि मैं आपको ही ज्यादा देखता हूँ, महाराज कृपाल को बिल्कुल नहीं देखता?*

बाबा जी: ज़्यादा से ज्यादा सिमरन करें ताकि वह स्वरुप भी साफ़ हो जाए। अभी स्वरुप हमारे ख्यालों में ही खोऐ हुए हैं। हमारी आत्मा पर जन्म–जन्म की मैल चढ़ी हुई है। पिछले जन्मों का तो हम क्या हिसाब लगा सकते हैं अगर इसी जन्म का ही हिसाब लगाएँ तो पता चलेगा किस तरह हमने अपने जीवन को दुनिया के ख्यालों में डुबाया हुआ है।

एक प्रेमी: *आपने पहले भी इसके बारे में बहुत कुछ कहा है लेकिन मैं फिर भी चाहूंगा की आप आश्रम में बातचीत करने के बारे में कुछ और बताएं? कभी ऐसा होता है कि हम महाराज जी के बारे में बात कर रहे होते हैं या हमें कोई और ज़रूरी चीज़ समझनी होती है अगर हम उसके बारे में बातचीत कर रहे होते हैं तो आश्रम के लोग हमसे नाराज़ हो जाते हैं।*

बाबा जी: बातचीत करने का ढंग होता है, यह उसी तक ही सीमित होनी चाहिए जिससे हम बातचीत कर रहे हैं। बेशक हम हुजूर की ही बात कर रहे होते हैं लेकिन कई दफा हम ऐसे बातचीत करते हैं जिससे कि दूर–नजदीक बैठे लोगों को परेशान कर देते हैं। हम यहाँ अभ्यास करने के लिए इकट्ठे होकर बैठते हैं, किस तरह अभ्यास करने लगते है, क्या यहां पर किसी को कोई तकलीफ़ है?

यहाँ हर आदमी प्रेम से अपना सिमरन करके आनन्द प्राप्त कर रहा है अगर सारे प्रेमी मिलकर ऊंची आवाज में सिमरन करने लग जाएँ तो किसी को कोई रस नहीं आएगा और सब परेशान हो जाएंगे और जिन लोगों को रस आता है, वे कहेंगे कि सतसंग हॉल का वातावरण तो खराब हो चुका है, कहीं और जाकर भजन पर बैठते हैं। इसी तरह अगर हम बातचीत करें तो वह सीमित होनी चाहिए यही हम सबके फायदे में है।

सीमित बातचीत करना भी एक तरह से आश्रम चलाने में सहयोग करना ही है। यह हमारे भजन–अभ्यास के लिए भी बहुत अच्छा है, हम जितनी ज़्यादा बातें करेंगे उतने ही हमारे ख्याल कम टिकेंगे। अगर हम ज़्यादा बातें करके एक घंटे के लिए भजन में बैठेंगे तो आधे घंटे तक हमारे ख्याल नहीं टिकेंगे। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि ज़्यादा बोलना भी ठीक नहीं होता और मौनी हो जाना भी ठीक नहीं होता।

एक प्रेमी: *मैं एक महीने से महाराज जी की मौजूदगी बहुत अच्छी तरह से महसूस कर रहा हूँ। हमारी तवज्जो हो या न हो लेकिन महाराज जी की तवज्जो हमेशा ही हमारी तरफ रहती है। मैं जानना चाहता हूँ कि अंदरूनी और बाहरी महाराज में क्या सम्बन्ध है? क्या इंसानी पोल पर काम कर रहे गुरु की तवज्जो चारों तरफ फैली होती है और अंदरूनी महाराज की तवज्जो के साथ इसका क्या सम्बन्ध है?*

बाबा जी: गुरु का बाहरी स्थूल शरीर हमेशा ही हमें नाम जपने की हिदायत देता रहता है और सतसंग के द्वारा हमारी कमियां बताता रहता है, उसका सम्बन्ध हमारे शरीर के साथ होता है। स्थूल देह की बहुत महिमा होती है, हमने फैले ख्यालों को इकट्ठा करके अपनी आत्मा को 'शब्द' के साथ जोड़ना है। उस 'शब्द' का सम्बन्ध हमारी आत्मा के साथ है।

एक प्रेमी: *अभी भी मुझे अच्छे से यह नहीं पता कि सिमरन कब करना चाहिए और शब्द कब सुनना चाहिए? जब तक सिमरन पक न जाए या महाराज जी का स्वरूप देख न लें तब तक सिमरन करते रहना चाहिए या एक घंटा सिमरन और एक घंटा शब्द सुनना चाहिए?*

बाबा जी: मैंने कई बार बताया है अगर आप एक घंटा अभ्यास करते है तो उसमें से आपको पंद्रह मिनट शब्द सुनना चाहिए। अभ्यास करते वक्त घड़ी की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए अगर पंद्रह मिनट की बजाए शब्द सुनने में दस या बीस मिनट लग जाएं तो भी कोई हर्ज नहीं है।

अगर आप उस एक घंटे में भी घड़ी देखते रहेंगे कि अभ्यास में बैठे हुए पौना घंटा हो गया है और अब मुझे शब्द सुनने के लिए बैठना है तो आपकी तवज्जो घड़ी की तरफ ही रहेगी। हमें थोड़े दिन ही यह मुश्किल पेश आती है लेकिन कुछ दिनों बाद अपने आप अंदर से ही घड़ी की तरह पता चलने लग जाता है कि मुझे अभ्यास में बैठे हुए कितना टाइम हो गया है। जब सुरत शब्द के साथ अटैच होने लग जाती है तो उस वक्त अभ्यास से उठने का दिल ही नहीं करता, शब्द सुरत को छोड़ता ही नहीं है।

जिन महात्माओं ने दिन–रात कमाई की, अपनी आत्मा को शब्द के हवाले किया, वे हमेशा ही प्रभु के आगे विनती करते रहे कि हे प्रभु, आप रात को लम्बी कर दें ताकि दिन चढ़े ही नहीं और हमारी सुरत शब्द के साथ जुड़ी रहे क्योंकि दिन चढ़ेगा तो हमें दुनिया के कारोबार करने पड़ेंगे। जब गुरु अर्जुन देव जी की सुरत शब्द के साथ लगी तो उन्होंने कहा:

वधु सुखु रैनड़ीए पृअ प्रेमु लगा, घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा।

रात को कहते है कि तू बढ़ जा, अब मेरा प्यारे के साथ प्यार लग गया है। नींद से कहते हैं तू कम हो जा अगर तू कम नहीं हुई तो तू मेरे और मेरे प्यारे के बीच दीवार की तरह खड़ी हो जाएगी और मेरा मेरे प्यारे के साथ का मिलाप तोड़ देगी। मैं सारे प्रेमियों को प्यार से सलाह देता हूँ, कई प्रेमी जो यहाँ भजन में आते है सिर्फ शुरू के चार–पांच मिनट जागते है और आखिर में दो–चार मिनट पहले ही उन्हें जाग आती है बाकी का सारा समय वे सोए रहते हैं।

मुझे यह समझ नहीं आता कि जो यहाँ आकर एक घंटा सो जाते हैं, वे क्या पाकर जाते होंगे। जब इतने प्रेमियों के बीच उनका मन शर्म महसूस नहीं करता तो मन उन्हें घर में किस तरह भजन करने दे सकता है? हमें इकट्ठे होकर भजन करने का यह बहुत ही अच्छा मौका मिला है क्योंकि इससे हमें भजन करने की आदत पड़ जाएगी। चाहे हमारी कमर या घुटने

दुखते हों, चाहे हमसे बैठा भी न जाता हो लेकिन हम एक–दूसरे की शर्म करेंगे कि लोग कहेंगे कि यह अभ्यास नहीं करता और सो गया है या अभ्यास से उठ गया है। हमें मन को मारने का यह अच्छा मौका मिला है।

***

2025 में 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान मे सतसंगों के कार्यक्रम

1. 31 जनवरी, 01 व 02 फरवरी
2. 28 फरवरी, 01 व 02 मार्च
3. 02, 03, 04, 05 व 06 अप्रैल
4. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
5. 03, 04 व 05 अक्टूबर
6. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
7. 05, 06 व 07 दिसम्बर

मुम्बई मे सतसंग का कार्यक्रम- 08 से 12 जनवरी

भूरा भाई आरोग्य भवन

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067

मोबाइल 9833004000

RNI No - RAJHIN/2003/9899